A3

A4

A5

मूल्यांकित आर्दश कॉपी

10575/117

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-3

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2303**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Bhanu Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No & Date): 3, 16/07/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	2	1	3	1	8	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained) 150

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
R-17

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
लेखन-शैली अच्छी है।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नँदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी॥
जागत, सोवत, सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जक री।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी॥
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी।
यह तो सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत पद्य अंश कृष्णभक्तिकाव्यधारा के शिखर कवि सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' से अवतरित है जिसका संकलन 'आचार्य शुक्ल' ने किया है। यहाँ गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रतिबद्धतामूलक प्रेम और विरह की मार्मिकता की अभिव्यंजना हुयी है।

व्याख्या गोपियाँ 'नागमती' की तरह अपने प्रिय (कृष्ण) के प्रति प्रतिबद्ध हैं। जिस तरह 'हारिल' पक्षी लकड़ी को हर समय अपने पंजों में पकड़े रहता है उसी प्रकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गोपियों ने कृष्ण को हृदय में दृढ़निश्चय से उतार लिया है। और कृष्ण का नाम ही दिन रात जपती हैं। तुम्हारा (उद्धव से) योग ज्ञान हमें कड़वी ककड़ी के जैसा लगता है। यह तो उनके लिए ठीक है जिनका मन चंचल है हमने तो मन-क्रम-वचन से 'कान्ह' को ही अपना मान लिया है।

भाव पक्ष

1. गोपियों की कृष्ण के प्रति प्रतिबद्धता अभिव्यंजित है।
2. प्रेम का निःस्वार्थ और गहरा रूप गोपियों में है।
3. 'योग ज्ञान' को भक्ति-प्रेम के समक्ष कमज़ोर माना है।

शिल्प-पक्ष

भाषा → ब्रजभाषा
रस → वियोग-श्रृंगार।
छंद → लीलापद-(सूर सगुन लीला पद गावै")
अलंकार- 'कड़वी ककड़ी' में उपमा अलंकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पद्यावतरण 'सूरदास' रचित 'भ्रमरगीत सार' से अवतरित है जिसका संकलन 'आचार्य शुक्ल' ने किया है।

यहाँ राधा का वियोग और उनकी वीणा के रात्री पर प्रभाव का संवाद अभिव्यक्त हुआ है।

व्याख्या

कृष्ण के विरह में राधा की वीणा वादन से चन्द्रमा के रथ के मृग रुक गये हैं। कृष्ण वियोग में इस चाँदनी रात की शीतलता भी उन्हें अग्नि के समान लग रही है इसलिए राधा से गोपियाँ इस वीणा को बंद करने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

का आग्रह करती हैं ताकि हिरन चन्द्रमा के रथ को हाँक सके और यह रात्रि समाप्त हो

सखियाँ कहती हैं कृष्ण के वियोग में हर समय आँखों से आँसू आते रहते हैं। हमारा कोई भी प्रयास इस विरहाग्नि को समाप्त करने में सफल नहीं हुआ है।

भावपक्ष

1. विरह में आँखों से अश्रुधार का वर्णन नागमती के वियोग की तरह है - "बरसै मघा झकोरि-झकोरी मोर दुइ नैन चुवहिं जस ओरि"
2. विरह का मार्मिक किंतु अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

शिल्पपक्ष भाषा → ब्रजभाषा

रस → विप्रलंभ श्रृंगार।

छंद → लीलापद (सूरसागर लीलापद गावै")

अलंकार → 'कमलनयन' में 'रूपक' अलंकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत 'साखी', भक्तिकालीन संतकाव्यधारा के पुरोधा कवि 'कबीर' की 'कबीर ग्रंथावली' से लिया गया है इसका संकलन 'बाबू श्यामसुंदर दास' द्वारा किया गया है।

इस साखी में ('विरह को अंग') कबीर ईश्वर मिलन की तड़प और रहस्यानुभूति की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

व्याख्या कबीर कहते हैं ब्रह्मोपलब्धि की विरह वेदना मुझपर इस प्रकार छायी है कि आँखों से अश्रुधार रहट (मध्यकालीन पानी निकालने वाला यंत्र) की तरह निरंतर आखों से बह रही है। मेरा मन 'निर्गुण' राम की रट पपीहा की तरह लगा रहा है हे मेरे आराध्य आप से मेरा एकाकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कब होगा।

भाव-पक्ष

1. विरह की दारुण, मर्मस्पर्शी वर्णना है।
2. पंक्तियों में 'भावनात्मक रहस्यवाद' की अनुगूँज है।
3. कबीर के राम 'निर्गुण ब्रह्म' हैं।
   यथा - "निर्गुण राम जपहु रे भाई"

शिल्प-पक्ष

भाषा → सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी)

रस → वियोग / या ईश्वरपरक वियोग

छंद → दोहा।

अलंकार → 'पपीहा' में उपमा अलंकार

दृष्टि The Vision

(घ) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिठ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोंरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत पद्य भक्तिकालीन संतकाव्यधारा के सूफी कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' कृत 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग-खण्ड' से अवतरित है। यहाँ कवि ने नागमती के वियोग की ग्रार्हस्थिक, दायित्वमूलक प्रेम व विरह का मर्मस्पर्शी अंकन किया है।

व्याख्या नागमती एक वर्ष से 'रत्नसेन' का इंतजार कर रही है और एक-एक पहर एक युग के समान लगता है पर उसके कृष्ण और दर्शन नहीं देते वह रोज पथ (रास्ते) को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निहारती रहती है। इस विरह की अग्नि से उसका शरीर कोयला हो चुका है और शरीर से खून की बूँद-बूँद आँखों से बह गयी है। वह कहती है कि बस मेरे प्रियतम वापस आ जाएँ वह रत्नसेन की खबर लेने के लिए लोगों के घर-घर जाती रहती थी।

भाव-पक्ष

1. विरह में भावुकता अपने चरम पर है।
2. 'नागमती रानी' नहीं 'साधारण पत्नी' के रूप उपस्थित है।
3. उसके प्रतिबद्धामूलक प्रेम का वर्णन है।
4. आचार्य शुक्ल ने इस वर्णन को 'हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु' कहा है।

Gd

शिल्प-पक्ष — भाषा → ठेठ अवधी, रस → करुण विप्रलंभ
छंद → दोहा, चौपाई की कड़वक बद्ध शैली।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

संदर्भ एवं प्रसंग — यह पद्यखण्ड आधुनिक कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' जी की उद्‌बोधनपरक काव्य रचना 'भारत-भारती' के 'वर्तमान खण्ड' से अवतरित है। गुप्त जी यहाँ शिक्षा के महत्त्व और भारतीयों द्वारा शिक्षा की उपेक्षा पर व्यंग्य को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या — गुप्त जी कहते हैं कि 'शिक्षा' वस्तुतः समाज व मनुष्य की उद्धारक है और भारत में शिक्षा का महत्त्व प्राचीन काल से ही स्थापित रहा है पर अब वह मात्र कुछ हाथों तक सिमट कर अपनी प्रतिभा खो बैठी है और सम्पूर्ण समाज व देश के जनजीवन को अँधेरे ने

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जकड़ लिया है।

भाव पक्ष

1. गुप्त जी ने 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी' के माध्यम से अतीत, वर्तमान और भविष्य का विश्लेषण किया है। यहाँ वर्तमान पक्ष का सूक्ष्म विश्लेषण कर रहे हैं।

2. शिक्षा का महत्व स्थापित किया गया है। मण्डेला ने भी कहा है- " शिक्षा से हम विश्व को बदल सकते हैं "

3. शिक्षा के अभाव पर क्षोभ है।

शिल्प पक्ष भाषा → अभिधात्मक व व्याख्यात्मकता लिए तत्सम प्रधान खड़ी बोली।

छंद → हरिगीतिका

अलंकार → 'सिद्ध कविता कामिनी' में रूपक

दृष्टि The Vision

3. (क) पदमावत में लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 20

पद्मावत का सम्पूर्ण ढाँचा लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति से युक्त है। यह संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर जायसी के समय की लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति है। पद्मावत में निम्न स्तरों पर लोकसंस्कृति अभिव्यक्त हुयी है।

भाषा पद्मावत की भाषा अवध में प्रचलित ठेठ अवधी है। आचार्य शुक्ल स्वयं कहते हैं-" पद्मावत की अवधी की खालिस बेमेल मिठास के लिए जानी जाएगी "।

~~पद्मावत~~ ~~में~~ जायसी ने अवध में प्रचलित लोक संस्कृति के शब्दों (दंवगरा), मुहावरों, लोकोक्तियों का जीवंत प्रयोग किया है।

उदा० 'हिय फटा', 'सूधी अंगुरी न निकसै घीउ'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उत्सव व त्यौहार भारत उत्सव प्रधान देश है यहां हर पखवाड़े में त्यौहार आते हैं। इसके अलावा लोकगीत, संगीत आदि का वर्णन जायसी ने किया है। पद्मावत में 'होरी, फाग, झूमर नृत्य इत्यादि का जीवंत वर्णन हुआ है।

परिवार जायसी ने पद्मावती के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार परिवार में महिलाओं पर तमाम प्रतिबंध होते हैं और पारिवारिक ढांचे के भीतर स्त्री का जीवन चुनौतीपूर्ण है। पद्मावती की सखियां कहती है -

"सास ननद कहि जिव लेहिं, दारुन ससुर न निकसै देहिं"

सिंहलद्वीप का वर्णन सिंहलद्वीप के वर्णन में जायसी ने लोकसंस्कृति का मनोरम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वर्णन किया है। सिंहलद्वीप में पानी भरती महिलाओं का एक दृश्य इस प्रकार है -

"पानी भरै आवैं पनिहारी, रूप सरूप पदिमनी नारी"

जायसी ने सिंहलद्वीप के स्थानीय हाट का वर्णन किया है जहां "किए सिंगार बैठी बेसा" और "कोटि खिलार हार लेहि पासा, हाथि-झारि उठि चलहिं निरासा" जैसे कथनों में बाजार का चित्र खींचा है।

यहीं जायसी विवाह के दृश्य को दिखाते हैं जहाँ "पद्मावती धौराहर चढ़ि" कहकर बताते हैं कि किस प्रकार भारत में लोग बारात को उत्सुकतापूर्वक देखते हैं।

वस्तुतः पद्मावत में लोकसंस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है और यह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पद्मावत की शक्ति' है।

हालांकि कुछ स्थानों यथा 'घोड़े का वर्णन', अलाउद्दीन की दावत के समय पकवानों का वर्णन आदि में परिगणनात्मक शैली के कारण पाठक कुछ अरुचि महसूस कर सकता है। तथापि लोकसंस्कृति के जीवंत चित्र पाठक को भी जायसी के समय का जीवंत अनुभव कराते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

राम की शक्तिपूजा मिथकीय आख्यान के ढाँचे में रचित अत्यंत संभावनाशील और बहुअर्थगर्भी रचना है। इसकी संवेदना 'सीता मुक्ति', 'नारी मुक्ति', 'राम के संघर्ष' (निराला के संघर्ष' और निराला की भक्ति भावना के साथ-साथ भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

वस्तुतः 'राम की शक्तिपूजा' में मूल चिंता है 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' यह शक्ति 1936 के भारत में अंग्रेजी साम्राज्य से सहज ही जुड़ जाती है।

कविता के नायक श्रीराम जो कि संभवतः गांधी जी का प्रतीक हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सीता मुक्ति (भारतीय स्वतन्त्रता) के लिए शक्ति का संधान करते हैं। किंतु अंततः वे दुःखद सोचते हैं-

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध"

यह "यह आत्मधिक्कार भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भी दिखता है।

गांधी जी का एक वर्ष में स्वतन्त्रता दिलाने का वायदा विफल होगया है और असहयोग व सविनय अवज्ञा आंदोलन भी विफल हो चुके हैं। ऐसे में यह संशय बोध होता है-" स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय"

कविता में हनुमान की प्रचण्ड शक्ति का उल्लेख है जो कि क्रांतिकारी आतंकवाद और व्यक्तिगत शक्ति प्रयोग का प्रतीक है। कविता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यह स्पष्ट करती है कि हनुमान सर्वाधिक शक्ति-शाली है पर यह शक्ति प्रयोग अधिक हिंसा और को जन्म दे सकती है।

'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' की सलाह 1942 के करो या मरो के नारे के रूप में दिखती है। कविता के नायक राम युद्ध से पृथक होकर शक्ति का संधान करते हैं जो महात्मा गांधी के संघर्ष-विराम-संघर्ष की ही अभिव्यक्ति है।

वस्तुतः यह कविता बहुअर्थगर्भत्व को धारण करती है जिसका एक पक्ष स्वतन्त्रता आंदोलन के सन्दर्भ में खुलता है।

Good 9/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता के मूल मंतव्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

हरिजनगाथा कविता मार्क्सवादी दर्शन से प्रेरित और प्रगतिवादी रचना दृष्टि से ओत-प्रोत आधुनिक जनवादी कवि 'नागार्जुन' की प्रमुख कविता है।

इस कविता की मूल संवेदना बिहार के 1973 के बेलछी काण्ड पर आधारित है। जिसमें सवर्ण वर्ग के लोगों द्वारा दलित वर्ग के कुछ लोगों को जिंदा जला दिया गया था।

कविता के प्रथम भाग में नागार्जुन बेलछी काण्ड की स्मृतियों का वर्णन करते हैं और यह बताते हैं कि यह कोई आवेश में हुयी घटना नहीं थी इसके लिए सरेआम पखवाड़े भर तैयारियां चली थीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कविता की निम्न पंक्तियाँ किस प्रकार प्रशासन तंत्र की संवेदनहीनता व उसके शोषक वर्ग के प्रति झुकाव को बयाँ करती हैं-

"महज दस मील दूर पड़ता है थाना
और दरोगा जी तक बार-बार खबर
पहुँचा दी गयी है संभावित घटनाओं की"

कविता के दूसरे भाग में नागार्जुन ने कृष्ण मिथक के माध्यम से शोषित वर्ग में क्रांति-चेतना के विकास को दिखाया है। कृष्ण मिथक और ज्योतिषी की भविष्यवाणी दिखाती है कि वंचित वर्ग अब अपने दमन को तैयार नहीं और निर्णायक संघर्ष के लिए तैयार है।

कविता की प्रासंगिकता के स्तर पर हम देखें तो वर्तमान में भारतीय समाज में

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंसक क्रांति संभव नहीं दिखती।

किंतु शोषित वर्ग की मर्मभेदी 'स्वपंवेदना' की प्रभावी अभिव्यक्ति और प्रगतिवादी रचनादृष्टि के स्तर पर 'हरिजन-गाथा' कविता अत्यंत प्रासंगिक है।

4. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर भारत के 'लोरका' माने जाते हैं। उनका अनुभूतिशील व्यक्ति अपने समय की प्रतिमानवीय शक्तियों से तो टकराता ही है। साथ ही उनकी मानवतावादी दृष्टि 'लोक' को कई ऐसी दृष्टियाँ भी देता है जो आज भी प्रासंगिक है।

कबीर कहते हैं "मैं कहता आँखिन देखी" उनका यह विचार 'संचार सूचना विस्फोट युग में अत्यंत प्रासंगिक है। जहाँ फेक न्यूज, नेताओं के क्रूर सांप्रदायिक झड़पों, हत्याओं का कारण बन जाते हैं।

कबीर किसी भी तरह के शास्त्रवाद, अभिजात्यवाद, रूढ़िवाद का खण्डन करते हैं। कबीर जीवन के सभी पहलुओं में अभिजात्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानसिकता का खण्डन करते हैं। आगामी अभिजात्य पर वे कहते हैं-

"संस्कृत है कूप जल, भाखा बहता नीर"

आज हमें धार्मिक कट्टरता का उत्थान चारों ओर दिखता है। कबीर धर्म की अंधविश्वासी दृष्टि पर चोट करते हैं और आत्मावलोकन की प्रेरणा देते हैं-

"हिंदू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना
आपस में दोउ लरि मुए मरम न काहू जाना"

वस्तुत: कबीर 'धर्म' के 'मर्म' को धारण करने की प्रेरणा देते हैं।

आज के युद्ध, ईर्ष्या, आतंकवाद, हिंसक घटनाओं आदि, वैमनस्य आदि के समय में कबीर की 'प्रेम संबंधी' उक्तियां

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत्यंत प्रासंगिक है। कबीर इसी को सच्चा विद्वान मानते हैं जो 'प्रेम' का मूल्य समझता है-

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय"

वर्तमान में अमीर, गरीब के मध्य बढ़ती खाई, उपभोक्तावादी और ज्यादा से ज्यादा भौतिक संसाधन इकट्ठा कर लेने वाली मानसिकता का बोलबाला चारों ओर दिखता है। ऐसे में कबीर का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है- कि

"साईं इतना दीजिए, जामै कुटुम्ब समाय
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाए"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वस्तुत! कबीर का काव्य वर्तमान में भी व्यक्ति, समाज, प्रकृति, धर्म, दर्शन, भाषा इत्यादि तमाम क्षेत्रों में उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-भारती' के 'काव्य-शिल्प' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत भारती ~~मैथिली~~ शरण गुप्त जी की 1912 में रचित नवजागरण के मूल्यों से युक्त एवं उद्बोधनपरक रचना है। भारत के अतीत, वर्तमान व भविष्य के सूक्ष्म विश्लेषण की संवेदना की इच्छा में गुप्त जी ने शिल्प को कोई महत्व नहीं दिया है। तथापि भारत-भारती की प्रमुख शैल्पिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

भाषा भारत-भारती की भाषा खड़ी बोली हिंदी है जो सपाट, इतिवृत्तात्मक व गद्यात्मक है। उदाहरणार्थ –

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"

इस इतिवृत्तात्मकता, गद्यात्मक के पीछे का कारण स्पष्ट करते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"बारपद है कि यह खड़ी बोली के परिमार्जन का काव्य है।

गुप्त जी ने यथास्थान अंग्रेजी (यूरोपियन हिस्ट्री, बैलून, मेड इन इण्डिया) तथा अरबी, फारसी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है।

काव्यरूप भारत-भारती 'दीर्घप्रबंधधर्मी' रचना है। इसे एक ही विषय पर लिखे मुक्तकों का संग्रह भी माना जाता है।

प्रतीक विधान चूँकि भारत-भारती एक उद्बोधनपरक काव्य है इसलिए गुप्त जी कथ्य को 'अभिधात्मक' रूप में प्रस्तुत करते हैं ताकि आम आदमी तक उनका संदेश सहजता से प्रेषित है।

भारत-भारती बिंब, अलंकार इत्यादि के प्रति उदासीन है जो कि गुप्त जी

द्वारा सोद्देश्य किया गया है।

सम्पूर्ण रचना 'हरिगीतिका' छंद में बद्ध है और 'तुकान्तता का आग्रह' लगातार बना है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डा. रामविलास शर्मा के अनुसार ब्रह्मराक्षस कविता में वर्णित ब्रह्मराक्षस वस्तुतः अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।

ब्रह्मराक्षस की मूल समस्या है- 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस आजीवन आत्मचेतस और विश्वचेतस के मध्य की युगपत द्वंद्वात्मक स्थिति में फंसा रहा और मर गया।

डा. शर्मा ने कहा है कि "अस्तित्ववाद के पितामह कीर्केगार्द ने मनुष्य की भूलों, अपराध भावना, पाप संबंधी चेतना, आत्मपरिष्कार की तड़प और आत्मसंघर्ष से मुक्ति आदि पर बड़ा बल दिया है"

ये सारी स्थितियाँ ब्रह्मराक्षस के व्यक्तित्व में दिखती है। ब्रह्मराक्षस आजीवन

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गणितीय ज्यामिती से युक्त व्यक्तित्व को साधने में लगा रहा और इसी 'अतिरेकवादी पूर्णता' की प्राप्ति के संघर्ष में उसकी मौत हो गयी।

ब्रह्मराक्षस की भूल यह थी कि वह समाज से कटा रहा। यथा

किस तरह वह कोठरी में
अपना गणित करता रहा
और मर गया।

ब्रह्मराक्षस कविता में अस्तित्ववादी मान्यता का यह प्रभाव दिखता है कि ~~व्यक्ति~~ प्रामाणिक व्यक्तित्व आत्मसंघर्ष, संत्रास, अनिर्णय से उत्पन्न अपराधबोध की पीड़ा के लिए बाध्य है। यह मार्क्सवादी विचार ~~कि~~ 'व्यक्तित्व' कोई निरपेक्ष वस्तु नहीं बल्कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से निर्मित वस्तु है" के विपरीत

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतीत होता है। इसीलिए ब्रह्मराक्षस के व्यक्तित्व का विखण्डन हो गया है-

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ / वे एक आभ्यांतर
निराले लोक की / एक चढ़ना औ' उतरना /
पुनः चढ़ना औ लुढ़कना / मोच पैरों में
व छाती पर अनेकों घाव /

मुक्तिबोध यह समझ चुके हैं कि सम्पूर्ण विश्वचेतस होना कोरी कल्पना है और व्यक्तित्व में कुछ न कुछ मात्रा में 'स्व' की भावना बची ही रहेगी। इसीलिए वे ब्रह्मराक्षस के '<u>सजल उर शिष्य</u>' बनना चाहते हैं'।

स्पष्ट है कि ब्रह्मराक्षस अस्तित्ववादी मान्यताओं और खण्डित व्यक्तित्व का प्रतीक है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत '<u>कड़वक</u>' भक्तिकालीन 'रामकाव्यधारा' के पुरोधा कवि '<u>गोस्वामी तुलसीदास</u>' द्वारा रचित '<u>रामचरितमानस</u>' के '<u>सुन्दरकाण्ड</u>' से लिया गया है।

यहाँ गोस्वामी जी विभीषण द्वारा रावण को <u>भगवान राम के</u> प्रति समर्पण और सीता को सकुशल वापस करने की सलाह दे रहे हैं।

व्याख्या गोस्वामी जी बताते हैं कि रावण

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के दरबार में विभीषण अपना आसन ग्रहण कर और अवसर आने पर भ्राता रावण को सुनीति समझाते हैं। कि यदि आप ~~स्वा~~ (रावण) अपना कल्याण चाहते हैं, अपना शुभ और सुख चाहते हैं तो चौथ के चाँद की तरह अपनी हठ छोड़ दो। जिन राम को संत पूजते हैं। अपने सभी लोभ, अहंकार त्याग कर उनकी शरण प्राप्त करलो, सीता को वापस करदो और युद्ध की हठ छोड़ दो।

भाव-पक्ष

1. विभीषण की 'राम' के प्रति श्रद्धा अभिव्यंजित की गयी है।
2. तुलसी का भक्त हृदय विभीषण के मुख से 'राम' का गुणगान करा रहा है।

शिल्प भाषा - अवधी, रस - भक्ति व (शांत)
छंद - दोहा, चौपाई की कडवकबद्ध शैली।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।
कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोहि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग उपर्युक्त दोहा 'कबीर' की साखियों के 'विरह कौ अंग' से अवतरित है। इसका संग्रह 'श्यामसुन्दर दास' जी द्वारा 'कबीर ग्रंथावली' नाम से किया गया है।
पंक्तियों में कबीर ईश्वर मिलन की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या कबीर कहते हैं हे प्रभु (निर्गुण ब्रह्म) मैं आपको ही हर क्षण 'मनन' करता हूँ, आपके दर्शन की आस में मेरे नयन थक चुके हैं। वह कौन सा दिन होगा जब मुझे आपका दर्शन (ब्रह्मोपलब्धि) होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाव-पक्ष

1. ब्रह्मोपलब्धि की यह तड़प कबीर पर 'सूफी तसव्वुफ' का प्रभाव है।

2. पंक्तियाँ ईश्वरपरक 'भावनात्मक रहस्यवाद' की व्यंजना कर रही हैं।

शिल्प-पक्ष

भाषा → सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी)

रस → भक्तिपरक वियोग (विप्रलंभ) व करुण रस।

छंद → दोहा।

अलंकार → अतिशयोक्ति (विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन)

(ग) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।।
वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि धनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भइ भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग उपरोक्त पद्यांश भक्तिकालीन कृष्णकाव्यधारा के महानतम कवि 'सूरदास' की रचना 'सूरसागर' से लिया गया है जिसका संकलन 'आचार्य शुक्ल' ने 'भ्रमरगीत सार' नाम से किया है।

यहाँ गोपियाँ उद्धव से अपने विरह का मार्मिक वर्णन कर रही हैं।

व्याख्या गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि कृष्ण के बगैर ये मधुबन की लताएँ आग के समान लग रही हैं। कृष्ण की उपस्थित में लताएँ मनोहर और शीतल लगती थी पर अब नहीं। जमुना की हलचल, खग की कूक,

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुष्प, हवा सब कुछ मानो सूख चुका है उसमें रस समाप्त हो गया है।

हे उद्धव श्री कृष्ण से कहना कि यह विरह मृत्यु हमें क्यों दे रहे हो तुम्हारी स्मृति में हमें तुम्हारा रास्ता जोहते रहते हैं जिससे हमारी आँखें लाल वर्ण की हो गयी हैं।

भाव-पक्ष

1. विरह की अत्यंत 'वेदनापूर्ण', 'मार्मिक' व हृदयविदारक अभिव्यक्ति है।
2. गोपियों की कृष्ण के प्रति एकनिष्ठता, सरलता और भावुकता दर्शनीय है।
3. ऐसी ही दशा पद्मावत में नागमती की है - "बरसैं मघा झकोरि-झकोरि, मोर दुइ नैन चुवहिं जस ओरी"

शिल्प भाषा - ब्रजभाषा
रस - करुण विप्रलंभ, अलंकार - 'विषम ... में - उपमा

(घ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,-ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

सन्दर्भ व प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ कविवर 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' नामक लंबी कविता से ली गयी हैं।

यहाँ राम निराशा, संशय बोध की स्थिति में सीता से प्रथम मिलन की स्मृति से 'विश्वविजयभावना' की पुनर्जागृति का प्रयास कर रहे हैं।

व्याख्या राम रावण के अपराजेय समर के बाद राम शक्ति के रावण के पक्ष में होने से

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संशय विकलता बोध से ग्रस्त हैं। ऐसे में (जानकी के उद्धार) न होने की चिंता उन्हें सीता जी के साथ उनकी पहली मुलाकात की स्मृति तक ले जाती है। राम को विदेह का वह पुष्पवन याद आता है जहाँ उन्होंने पहली बार सीता को देखा था। इस मिलन से प्रकृति भी मानो भावविभोर होकर हर्षोल्लास और उत्साह से भर उठी थी।

भाव-पक्ष

1. राम यहाँ ईश्वर नहीं मानव के रूप में हैं।
2. 'स्मृति' के माध्यम से उत्साह और आत्मविश्वास राम के चरित्र को अत्यधिक मानवीय बनाते हैं।

शिल्प-पक्ष भाषा – तत्समीकृत खड़ी बोली।
रस – भक्ति, शांत व संयोग श्रृंगार

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) स्वारथ को साज न समाज परमारथ को,
मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है।
कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,
लिखी न बिरंचि हू भलाई भूलि भाल है।
रावरी सपथ, राम! नाम ही की गति मेरे,
इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है।
तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपालु!
कीजै न बिलंब, बलि, पानी भरी खाल है।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग उपरोक्त पद्य खण्ड भक्तिकाल के रामकाव्यधारा के शीर्ष कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'कवितावली' से अवतरित है।

पंक्तियों में तुलसीदास जी का राम के प्रति अनन्य भक्ति भाव व्यंजित हुआ है।

व्याख्या तुलसीदास कहते हैं यह समाज स्वार्थी है वह परमार्थ का साथी नहीं है। इसलिए मेरे जैसा कोई दगाबाज भी यहाँ नहीं है। मैंने भलाई का कोई निश्चित वायदा नहीं किया किसी से इसलिए व्यवहार में कर्तव्य भी नहीं किसी के साथ। मेरी (तुलसी की) एक मात्र शपथ या वायदा प्रभु श्री राम के प्रति है। और यहाँ झूठ या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्वामी मुझे काल या नरक के रास्ते पर ले जाएगा। हे ईश्वर तुलसीदास पर बस आप की ही कृपा की आवश्यकता है। अब अपने शरण में लेने में देरी मत करिए।

भावपक्ष

1. तुलसी का 'भक्तहृदय' अपने आराध्य के प्रति अनन्य विश्वास और श्रद्धा से भरा है।
2. कबीर भी राम की भक्ति करते हैं पर उनके राम 'निर्गुण राम' हैं।
3. तुलसी सभी समस्याओं से तारनहार के रूप में अलौकिक हल के रूप में 'प्रभु राम' की कृपा की कल्पना करते हैं।

शिल्पपक्ष

भाषा → ब्रजभाषा
रस → 'भक्ति रस'
अलंकार → "पानी भरि जात है" में अन्योक्ति अलंकार

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीत परंपरा का आरंभ कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम' में और इसका प्रस्थान बिंदु 'भागवत' को माना जाता है। पर इन सबमें सूरदास का भ्रमरगीत उनकी 'भक्ति भावना', सहृदयता और मौलिक उद्भावनाओं के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सूरदास ने भ्रमरगीतसार में उद्धव व गोपी संवाद को सगुण-निर्गुण द्वंद्व का रूप दे दिया है। सूर की गोपियाँ कृष्ण प्रेम से आप्लावित, अत्यंत भावुक और उनके विरह की पीड़ा में दग्ध हैं। पर कृष्ण मथुरा से स्वयं न आकर उद्धव को भेजते हैं जो अत्यंत नीरस, योगी और निर्गुण मार्गी हैं।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उद्धव अपना निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान गोपियों को सिखाना चाहते हैं।

गोपियाँ सगुण ब्रह्म अर्थात कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति की दृढ़ स्वयम्भू है। वे उद्धव के निर्गुण के संबंध में कठिन प्रश्न करती हैं।

"निर्गुण कौन देश को बासी
को है जनक जननि को कहियत,
कौन नारि को दासी"

इसके बाद गोपियाँ 'निर्गुण' ब्रह्म के प्रति व्यंग्य की मुद्रा में ~~आती~~ जाती हैं। और उद्धव का मज़ाक उड़ाती हैं-

"आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की, ब्रज में आन उतारी"

दृष्टि The Vision

गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और एकनिष्ठता के संबंध में मजबूत तर्क देती हैं।

"ऊधौ मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयो स्याम संग, को अराधै ईस"

गोपियाँ उद्धव से समीरस निर्गुण ब्रह्म की जगह प्रकृति से जीवन के 'राग' को समझने की सलाह देती है-

"उद्धव कोकिल कूजत कानन"

इस बिंदु पर सूरदास ने दिखाया है कि उद्धव निर्गुण ब्रह्म की जगह सगुण ब्रह्म की ओर आकृष्ट होने लगे हैं-

"अब अति पंगु भयो मन मेरो
गयो जहाँ निर्गुण कहिबे को, भयो सगुन को चेरो"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार सूरदास ने निर्गुण पर सगुण की विजय स्थापित की है।

हालांकि भ्रमरगीत को निर्गुण पर सगुण का काव्य मानना उचित नहीं वस्तुतः गोपियों और उद्धव के मध्य यह शास्त्रार्थ तार्किक नहीं है क्योंकि सूर ने उद्धव को बोलने का मौका ही नहीं दिया और दूसरी बात यह कि भ्रमरगीत में 'निर्गुण सगुण द्वंद्व' के अतिरिक्त, गोपियों के विरह की गहनता, मानव-प्रकृति संबंध, शहर गांव द्वंद्व, सामाजिक व राजनीतिक चिंताएँ भी वर्णित हैं।

Good 12

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय रचना है'- इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जायसी ने पद्मावत में नागमती के विरह में कुछ ऐसे तत्वों का समावेश किया है कि यह 'हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ विरह वर्णन के रूप में स्थापित हो गया है।"

आचार्य शुक्ल ने तो इसे "हिंदी साहित्य की अद्वितीय रचना" कहा है।

नागमती के विरह की प्रथम विशेषता है उसका 'नारीपन', नागमती 'रानी' नहीं 'नारी' के रूप में वर्णित है। उसे विरह में वही चिंताएँ सताती हैं जो एक सामान्य नारी को यथा-

"पुष्य नखत सिर ऊपर आवा, हौं बिनु नाह
मन्दिर को छावा"

~~नागमती~~ इस विरह वर्णन की दूसरी विशेषता है नागमती की प्रतिबद्धता। नागमती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पति (रत्नसेन) द्वारा दमित होकर भी उनके प्रति एकनिष्ठ व प्रतिबद्धतामूलक प्रेम से भरी है।

वह सोचती है -

"यह तन जारौं छार करि, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरैं जहँ पाँव"

नागमती की तीसरी विशेषता है उसकी मार्मिकता तथा गार्हस्थिकता। यथा वह अपना दुःख पशु-पक्षियों से कहने को बाध्य है।

"पिउ सो कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा हे काग
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहिक धुआँ हमहिं लाग"

इस विरह वर्णन पर मुग्ध हो आचार्य शुक्ल ने कहा है कि -"यह आशिक-माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं, हिंदू गृहणी की विरह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाणी है"

वस्तुतः आधुनिक नारीवादी व प्रगतिवादी समीक्षक नागमती के विरह को मध्यकालीन नारी की दासता का प्रतीक मानते हैं और उसे गार्हस्थिकता आदि के नाम पर महिमामण्डन का विरोध करते हैं।

वस्तुतः नागमती का विरह मध्यकालीन नारी की दासता होकर भी उसकी मार्मिकता, प्रतिबद्धता और 'नारीपन' महत्वहीन नहीं है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) संवेदना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

भारत-भारती 1912 में 'मैथिलीशरण गुप्त' जी द्वारा रचित नवजागरण की चेतना से ओत-प्रोत एक उद्बोधनपरक काव्य है। जिसमें "हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी" के माध्यम से भारत की गौरवपूर्ण अतीत तथा दुर्दशाग्रस्त वर्तमान और भविष्य के मार्गों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

किंतु वर्तमान समीक्षक गुप्त जी की दृष्टि और भारत-भारती की संवेदना की कुछ सीमाएं रेखांकित करते हैं- जो निम्न हैं।

1. भारत-भारती की पहली सीमा यह है कि इसमें वर्ग इतिहास के प्रति भौतिकवादी/ऐतिहासिक

दृष्टि अपनाती गयी है। जो अतीत से केवल स्वर्णिम स्मृतियों को ही उठाती चलती है।

2. गुप्त जी ने वर्तमान भारत की दुर्दशा, गरीबी का चित्रण तो किया है, पर उसके कारण के तौर पर अंग्रेजों का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। यह वही समस्या है जो भारतेन्दु युग के अधिकांश रचनाकारों में दिखती है।

3. एक अन्य सीमा गुप्त जी की दृष्टि हिंदू केन्द्रित व आर्य केन्द्रित है। जिससे देश के द्रविण व पूर्वोत्तर के समाज दूर जाते हैं और अन्य धर्म भी भेदभाव महसूस करते हैं।

द्रविड़

4. गुप्त जी का महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण परंपरागत, पितृसत्तात्मक विचारों से ग्रस्त है।

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation